तृतीय युवक - युवती परिचय सम्मलेन

जयपुर, 08 सितम्बर 2016

परम आदरणीय गोस्वामी श्री सुशील जी महाराज जी को मैं नमन करता हूँ, उनके आशीर्वाद से आज का कार्यक्रम सफल हो, आज के कार्यक्रम में युवक और युवतियों को एक दूसरे से जो मिलने का, समझने का, परिचय का मौका मिलेगा मैं समझता हूँ आपके आशीर्वाद से वो बहुत सफलता पाएंगे | हमारे यहाँ के समाज के सभी लोग, भारतीय जनता पार्टी के मेरे वरिष्ठ नेता और राजस्थान सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्रीमान काली चरण जी सर्राफ, मेरे परम मित्र डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी जी जोकि यहाँ के स्थानीय विधायक भी हैं और हम दोनों का पारिवारिक संबंध 50 साल पुराना है शायद उससे भी पुराना हो सकता है, इस संस्था के अध्यक्ष अशोक कुमार जी, श्रीमान पवन गोयल जी जोकि अध्यक्ष हैं जयपुर अग्रवाल समाज समिति के, श्री दिलीप वैध्य जी जोकि बड़े उद्योगपति हैं और समाज सेवक भी हैं साथ ही चेयरमैन हैं हेंडीक्राफ्ट एंड सेक्टर स्किल कौंसिल के, श्री एस. एल. अग्रवाल जी, श्री गोपाल गुप्ता जी, श्रीमान अशोक गुप्ता जी, श्रीमान दिनेश पोद्दार जी और समाज के सभी गणमान्य भाइयों, बहनों, माताओं, जयपुर के वरिष्ठ नागरिक आप सबको मैं प्रणाम करता हूँ और महाराजा अग्रसेन को मैं नमन करता हूँ, जिनके आशीर्वाद से आज का ये तृतीय युवक-युवती परिचय सम्मलेन संम्पन होने जा रहा है वो बहुत ही सफल हो |

मैंने सुना की 1300 बायोडाटा आपने सम्मलित किये हैं और पूरे 1300 बायोडाटा का विस्तार से छानबीन करके तैयार किया गया है | मैंने अभी आपकी किताब में भी देखा बहुत ही सक्षेप में परिचय दिया है, जिससे जानकारियां भी अच्छी मिल जाती है, मैं समझता हूँ जब आज के ज़माने में छोटे-छोटे परिवार या जब माँ-बाप अलग रहते हैं, बच्चे अपनी शिक्षा के लिए बाहर चले जाते हैं, नौकरी किसी और शहर में, व्यापर किसी और शहर में करते हैं तो ऐसे व्यस्त जीवन में आहिस्ते-आहिस्ते जमाना भी बदल रहा है, समय भी बदल रहा है, ऐसे में युवक-युवतियों को मिलने-जुलने का, एक दूसरे से परिचय करने का ये जो आपने कार्यक्रम यहाँ पर रखा है, मैं सभी आयोजकों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, ये एक अच्छी कल्पना है ये पूरे देश-भर में लेके जाये |

मैं समझता हूँ आज समय आ गया है कि जितना ज्यादा समाज खुलता है और ओपन सोसाइटी की तरफ जाता है उतना मैं समझता हूँ कि हमोर समाज का भी उद्धार होगा। अभी तक कुछ–कुछ सोशल एविल्स हैं, कुछ गलत काम अभी भी हमोर समाज में चलते हैं। मुझे याद है मैं बहुत छोटा था लगभग 30 वर्ष पहले की बात है, हरियाणा में ओमप्रकाश गोयल जी ने ये शुरू किया था कि शादी जब होगी तो एक नारियल और सवा रुपये से शादी होगी। एक प्रथा है नजर निकालना, ये एक चीज है जिसको हम सबको मिलकर मैं समझता हूँ कि तय करना पड़ेगा कि इसको कैसे खत्म करें, क्योंकि आजकल सवाल ये नहीं है कि नजर उतारी जा रही है, सवाल ये है कि वो सौ का नोट है, पाँच सौ का नोट है, हजार का नोट है, कितने नोट हैं उस पंखे में, अब कहीं सरकार बड़ा नोट ले आयेगी तो फिर अब और होने लग जायेगी, मैं समझता हूँ कि इन चीजों पर भी हमारा समाज अगर चिन्ता करे और जयपुर ऐसा प्रोग्रेसिव शहर है, जयपुर का हमारा समाज इस पर अगर एक कदम आगे बढ़ेगा तो मैं समझता हूँ कि पूरे देश के लिए मिसाल होगी, पूरे देश में ये मैसेज जायेगा और वैसे हम जरूर अग्रोहा में अग्रवाल समाज का, अग्रसेन का अपने साम्राज्य को अग्रसेन से जोड़ते हैं, पर मैं थोड़ा सा रिसर्च कर रहा था तो मेरे ध्यान में आया कि महाराजा अग्रसेन का ओरिजिनल किंगडम अग्रोहा नहीं था। वो तो ओरिजिनल किंगडम में, उनकी तो कहानी है, मैं कोई हिस्टोरियन नहीं हूँ, पर जो मुझे समझ में आई उनकी कहानी वास्तव में अग्रवाल समाज का भी जन्म ऐसे ही एक स्वयंवर के कार्यक्रम से ही हुआ है। एक स्वयंवर में

उन्होंने भाग लिया था, स्वयंवर में इन्द्र भगवान की लड़की को पसन्द किया, इन्द्र जी की इच्छा नहीं थी कि महाराजा अग्रसेन के साथ उनकी लड़की का विवाह हो, नहीं, नारद की लड़की कुमद के साथ विवाह हुआ और कुमुद जी की इच्छा नहीं थी कि उनकी लड़की से महाराजा अग्रसेन जी का विवाह हो, तो वो भगवान इन्द्र के पास गयी कि मुझे ये वरदान दो या इसका मुझे बदला लेना है, और उस गुस्से में इन्द्र देव ने बदला लिया और बारिश नहीं हुई महाराजा अग्रसेन के साम्राज्य में और जब बारिश नहीं हुई तो नयी जगह को ढूंढते–ढूंढते महाराजा अग्रसेन अग्रोहा पहुँचे, तो वास्तव में अगर हम इसे सामूहिक विवाह तो नहीं बोलें सकते मगर स्वयंवर बोल सकते हैं, फिर महाराजा अग्रसेन ने जो समाजवाद की नींव रखी, जिसका माननीय कालीचरण जी ने जिक्र किया उस नींव में से उन्होंने इस बात को पहचाना कि हमारे समाज को अगर पूरे विश्व में फैलाना है और हमारे समाज को आत्मनिर्भर बनाना है तो इनको बाहर जाना होगा, व्यापारी के रूप में जायें, देश भर में दुनिया भर में हमारा समाज फैले, व्यापार करे, और व्यापार कोई गलत काम नहीं होता है, व्यापार एक इज्जत का काम है, ये भी एक तरीके से देश सेवा और समाज सेवा का काम है। आप कल्पना करिए, अगर गाँव में एक छोटा दुकानदार या व्यापारी न हो तो गाँव को आज भी विश्वभर की सामग्रियों की सुविधाएं नहीं मिल सकतीं, वो तो ये व्यापारी हैं जो घूमता रहता है पूरे देश–दुनिया में क्या हो रहा है, क्या नई चीजें आ रही हैं, उनको लाता है अपनी दुकान पे, कई बार गरीबों के पास पैसा नहीं होता है तो पैसा भी छोड़कर सामग्री समय पर दे देता है कि चलो पैसा बाद में दे देना। इस प्रकार वह पूरे समाज में जो हमारा व्यापारी वर्ग है, जो खासतौर पर हमारे समाज के साथ काम से जुड़ा हुआ है उस काम का बड़ा महत्व है, पूरे देश की अर्थव्यवस्था को चलाने में, आज मैं अखबार में पढ़ रहा था, लगभग डेढ़ करोड़ छोटे दुकानदार इस देश में हैं, पच्चीस करोड़ परिवार जिस देश में हों, उसमें डेढ़ करोड़ छोटे दुकानदार होना इसका मतलब हुआ लगभग पन्द्रह–सोलह परिवारों के ऊपर एक दुकानदार, ये बात सच है कि हर एक दुकानदार हर एक चीज नहीं रखता है, कोई कपड़ा रखता है, कोई अलग प्रकार की राशन की वस्तु रखता है, कोई इलेक्ट्रॉनिक गुड्स रखता है, ये जरूरी नहीं है कि परिवार हर परिवार के पीछे एक ही दुकान का काम होगा, लेकिन जिस देश में डेढ़ करोड़ दुकानें चलती हों, और कितना भी कोई मॉल लगा ले या सुपरमार्केट लगा ले, मैं नहीं समझता हूँ कि छोटे दुकान का महत्व कभी भी कम हो सकता है। उल्टे अमेरिका या यूरोप में कॉर्नर स्टोर्स जो बढ़ रहे हैं, जो आंकड़े सुनने में आते हैं, उसमें बड़े मॉल आहिस्ते–आहिस्ते बन्द हो रेह हैं, और छोटे कॉर्नर स्टोर्स बड़ी अधिक मात्रा में बढ़ते जा रेह हैं। और अब ई–कॉमर्स के जमाने में तो मैं समझता हूँ कॉर्नर स्टोर्स या हमारी छोटी दुकानों का महत्व और भी बढ़ने वाला है । क्योंकि आप ई–कॉमर्स कम्प्यूटर द्वारा छोटे आर्डर्स जो करेंगे तो आहिस्ता–आहिस्ता उन्हें हमारे छोटे दुकानदारों के साथ जुड़ के लोकल डिलीवरी, लास्ट माइल कनेक्टिविटी के लिए इन छोटी दुकानों की आवश्यकता होगी।

कई बार हमारे पास कुछ प्रतिनिधिमण्डल आते हैं कि ई–कॉमर्स को रोको, बड़े सुपर मार्केट पर रोक लगाओ, मुझे इस बात से इतनी चिन्ता नहीं है, मैं समझता हूँ सुपर मार्केट आहिस्ते–आहिस्ते कम होते जा रेह हैं, किराया बहुत ऊंचा है, उसके लिए व्यक्ति को दूर जाना पड़ता है, बाद में ध्यान में आता है कि सुपर मार्केट में कोई सामान–वस्तु न तो सस्ते होते हैं और साथ ही साथ पार्किंग के लिए अलग पैसा दो, एन्ट्री के लिए कई बार अलग पैसा दो, एक बार डिनर के लिए जाओ तो खाने के लिए दो–ढाई सौ रुपये का भोजन भी करो, ये सब सुनके जो हमारे दुकानदार गली के नुक्कड़ से जो वस्तु जब चाहिए और मैं समझता हूँ एक रिश्ता ऐसा बन जाता है कि अगर आपको कोई चीज चाहिए तो दुकानदार आपको दुकान आधी रात को भी खोलकर दे देगा, अगर मैं आपके सडेनली किसी के घर आ जाऊं और आपको किसी सामान की जरूरत पड़ जाये, तो मुझे पूरा विश्वास है कि नुक्कड़ का दुकान वाला आधी रात को भी दुकान खोल के वो वस्तु हमें दे देगा। इस प्रकार का जो नाता आत्मीयता का नाता जो बन जाता है वही समाज की सही पहचान है। और अब समय आया है कि हम इस समाज को राजनीतिक भागीदारी से और ज्यादा, मैं राजनीतिक भागीदारी इसलिए कह रहा हूँ कि साधारणतः हमारे समाज के लोग और हमारे अग्रवाल समाज के लोग ज्यादातर आजकल चार्टर्ड अकाउंटेंट बनते हैं, नये–नये वकालत में भी अभी बहुत बढ़िया निकलने लग गये हैं, आजकल देखने में मिलता है कि कई लोग सॉफ्टवेयर और इंजीनियरिंग वगैरह करके आहिस्ते–आहिस्ते व्यापार से हट के प्रोफेशनल एंगेजमेंट में काम कर रेह हैं, तकनीकी कामों में भी लग गये हैं, लेकिन यही अगर हम यह सब सोचें तो हम अभी भी राजनीति से

थोड़ा परे हैं, और वैसे आपके राजनीतिक की बात से महाराजा अग्रसेन के तो सामाजिक दृष्टिकोण का पहचान भी महात्मा गांधी जी की पहचान रही, आप शायद भूल रहे हैं जो सबसे ज्यादा गरीबों के लिए, किसानों के लिए, शोषित–पीड़ितों के लिए चिन्तित नेता है इस देश के आजकल प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी वो भी हमारे समाज से ही रिश्ता रखते हैं। और वास्तव में हम सबके पास भगवान ने संसाधन दिये हैं, हम सबके पास एक व्यवस्था है, एक पारिवारिक व्यवस्था है, एक घर में दो भाई हैं, पिताजी हैं, सब मिलके रह रहे हैं, सब मिल के काम कर रेह हैं, ऐसे में सामाजिक काम ज्यादा है, ये तो हमारे समाज ने बहुत अच्छी तरह से ग्रहण कर लिया है। अभी–अभी मुझे बताया गया कि यहां पे अग्रसेन तिलोकी सेवा धाम से एक बहुत अच्छा सोशल प्रोजेक्ट जो एक प्रकार से अग्रोहा धाम का एक मॉडल के रूप में यहाँ पर बनाया जा रहा है पन्द्रह करोड़ रुपये की जमीन ली सेवा के नाम पे दी गयी, ऐसे सेवा कार्य का कालीचरण जी ने भी जिक्र किया, पूरे देश दुनिया में देखें तो सेवा कार्य में तो हमारा समाज एकदम आगे रहता है। लेकिन राजनीति को भी अगर हम सेवा से जोें तो राजनीति में भी बहुत बड़ी ताकत है। समाज सुधार की और समाज सेवा की। मुझे कई बार जब मैं छोटा था तो लोग मुझे पूछते थे कि तुम क्यों राजनीति में इतनी रुचि लेते हो, क्या है इसमें क्या रखा है, बहुत भ्रष्टाचार है, बहुत गलत काम होते हैं, ये तुम्हारी लाइन नहीं है, तुम्हारे जैसों की लाइन नहीं है, इसमें मत जाओ। एक बहुत साधारण सा अपने मिडिल क्लास घरों में, प्रोफेशनल घरों में, एक यह फीलिंग रहती है कि राजनीति अपना काम नहीं है। कोई और करेगा, और अगर वास्तव में आज देश की दुर्दशा हो रही है, देश में 70 साल आजादी के बाद भी लगभग 20–22 करोड़ लोगों को आज भी बिजली नहीं मिलती है, करोड़ो परिवार ऐसे हैं जिनके सर पर छत नहीं है, लाखों–करोड़ों विद्यार्थी हैं जो स्कूल की अच्छी शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते, स्कूल से ड्रॉप आउट हो जाते हैं, शायद खेत में काम करना पड़ता है, शायद दुकान पे काम करना पड़ता है, इन सबका कारण ये है कि अच्छे लोग राजनीति में नहीं गये, और मैं समझता हूँ कि हमारे समाज में वो क्षमता है, वो ताकत है, वो ईमानदार हैं, काम करने की चाहत है, कि अधिक से अधिक अगर लोग समाज सेवा में तो रहें ही पर समाज सेवा के साथ–साथ एक अच्छी राजनीति का परिचय देश को दें। एक अच्छे राजनीतिज्ञ के रूप में सेवा का कार्य करें और मैं समझता हूँ कि मेरे काम में जितना ज्यादा मैं बिजली की कीमतों को कम कर पाऊं, क्या वो समाज सेवा नहीं होगी, अगर मैं इन 20–22 करोड़ लोगों को जिनको आज तक बिजली नहीं मिल पाई इनके घरों तक बिजली पहुँचाने के काम में छोटी मात्रा में भी सफल हों, वैसे तो छोटी मात्रा में मेरा टारगेट नहीं है, मुझे तो हर एक घर में बिजली पहुँचानी है, पर मैं तो समझता हूँ कि अगर एक घर में भी बिजली पहुँचती है मुझे समाधान होता है और प्रोत्साहन होता है कि और अधिक काम करें। यह भी एक प्रकार से समाज सेवा ही है ना। अगर तीन–सवा तीन लाख करोड़ रुपये आगे आने वाले वर्षों में पूर्वी राज्यों को मिलेंगे कोयले के आवंटन से जो नीलामी के माध्यम से किया गया, तो सवा तीन लाख करोड़ रुपये आखिर जनता की ही सेवा में जायेंगे, वो किसकी जेब से निकलेंगे? वो एक बड़े व्यापारी या उद्योगपति जो मुफ्त में कोयले के ब्लॉक का जिसको आवंटन किया गया था पहले और उसमें कई विदेशी कम्पनियाँ थीं, तो एक प्रकार से भारत की सम्पत्ति बड़े–बड़े लोग उन विदेशी कम्पनियों के अलावा मुफ्त में सौदे के बदले उसको एक पारदर्शी तरीके से नीलामी से देने से जो लाखों करोड़ रुपये आयेंगे वो समाज में आते हैं और समाज सेवा और गरीबों के उद्धार में लगे, मैं समझता हूँ राजनीतिक जीवन में इस प्रकार का कार्य करने के बाद जो समाधान मिलता है उसी से मुझे मेरी इच्छा होती है कि मैं आपको भी रिक्वेस्ट करूँ, दरख्वास्त करूँ कि आप लोग भी राजनीति को बुरी नजर से मत देखिए। राजनीति को भी एक समाजसेवा का मौका समझिये। वैसे तो मेरे एक–दो कम्पनियां हैं अरुण जी अगर उन कम्पनियों को जो सीएसआर का काम है मैं उसी के आंकड़े बताऊं तो सालाना लगभग हजार करोड़ रुपये सिर्फ ये सरकारी कम्पनियां जो मेर नीचे हैं कोल इण्डिया, एनटीपीसी, एनएचपीसी, नाल्को और सब कम्पनियों को छोड़ो, सिर्फ सरकारी कम्पनियां और सिर्फ मेरे विभाग कम्पनियां, तो हजार करोड़ रुपये सालाना सामाजिक काम में लग गया। अब वो दो प्रकार के तरीके से लग सकता है, एक तो ईमानदारी से जहाँ सबसे अधिक आवश्यकता है, जिससे रियली गरीबों का अधिक उद्धार हो, या तो उस पर लग सकता है या अच्छी संस्थाओं द्वारा, अच्छे कार्यों द्वारा और या उसमें भी भ्रष्टाचार हो सकता है और गिनी–चुनी अपनी पारिवारिक संस्थाओं को दिया जा सकता है, ये भी एक अच्छा मौका है कैसे अच्छे तरीके से हजार करोड़ रुपये लगे और समाज में उसका प्रभाव पड़े, अच्छा पड़े, जब प्रधानमन्त्री जी ने पन्द्रह अगस्त 2014 को अपने पहले लाल किले के

उद्‌बोधन में कहा था कि देश में एक भी सरकारी स्कूल ऐसा नहीं रहेगा जहाँ लड़के और लड़कियों के लिए अलग–अलग टायलेट न हो। उन्होंने ये एक वर्ष में करने का बीड़ा उठाया। मुझे आपको बताते हुए खुशी भी होती है और एक प्रकार से दुःख भी है कि जब हमने आंकड़ा निकाला लगभग सवा चार लाख स्कूल ऐसे निकले, सवा चार लाख स्कूल देश भर में ऐसे थे जहाँ पर लड़के और लड़कियों के अलग–अलग शौचालय की व्यवस्था नहीं थी और उसके कारण हमारी छोटी, नन्ही कलियाँ, हमारी छोटी बेटियाँ, कई बार जैसे उमर बड़ी होती थीं उनको स्कूल छोड़ देना पड़ता था, प्रधानमन्त्री जी को इसकी चिन्ता थी कि गुजरात में वो विशेष करके छोटे बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, लड़कियों को अच्छी शिक्षा मिले, और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के बारे में तो आप सब जानते ही हैं, तो उन्होंने विशेष करके पहले ही वर्ष इस अभियान को संज्ञान में लिया, तब हमारे पास दो वर्ष का सीएसआर मिल गया, 14–15 का भी और 15–16 का भी क्योंकि अगस्त 2015 तक लक्ष्य पूरा करना था। तो हमने पूरे दो वर्ष का सीएसआर को जोड़ के लगभग पौने दो हजार करोड़ रुपये लगा के सिर्फ मेरे मन्त्रालय के द्वारा एक लाख इक्कीस हजार स्कूलों में लड़कों के लिए, लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाया। ये मैं इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मैंने कोई बहुत बड़ा तीर मार लिया, बहुत बड़ा काम कर लिया, मेरी तो शुरुआत ही इस बात से है कि मुझे तो दुःख है कि सत्तर वर्ष आजादी के बाद ये काम हुआ। बडे दुख की बात है, बड़े खेद की बात है। लेकिन, क्योंकि इन कम्पनियों के पास सीएसआर फण्ड था, दो वर्ष का फण्ड कम्बाइन करके इसका एक योजनाबद्ध तरीके प्रयोग किया गया, बजाय कि ये फण्ड ऐसे ही कल्चरल प्रोग्राम्स और विधायक, सांसदों की रिकमेंडेशन पर इधर–उधर दे दिया जाये, पूरा पैसा एक अच्छी योजना के हिसाब से एक सवा लाख टायलेट बनाने में लग पाये।

अभी शुक्रवार को एक कार्यक्रम में मेरे मन्त्रालय के सभी अधिकारी थे, उसमें एक अधिकारी एक जूनियर अधिकारी ने, एक नया लड़का जो मिनिस्ट्री में आया उसने ये विषय निकाला कि सर अब समय आ गया है कि हम सभी सवा लाख, एक लाख इक्कीस हजार शौचालयों का जाकर निरीक्षण करें कि ठीक से चल रहे हैं कि नही, उसकी स्कूल वाले देखरेख कर रहे हैं कि नहीं, कुछ और अधिक काम की आवश्यकता हो तो वो करवायें और मुझे बड़ी खुशी हुई आखिर एक सरकारी कर्मचारी जिसमें मैं समझता हूँ हम सबने जिन्दगी भर कोसा ही होगा, उसको सुनने को जब मिला, कि साहब हमने टायलेट तो बना दिया है, उसके निरीक्षण करके एक वर्ष तो हो गया है, देखें कि ठीक चल रहे हैं कि नहीं, कुछ सुधार करना हो, कुछ दुरुस्तीकरण करना हो, तो उस पर विशेष ध्यान दें। मुझे आनन्द हुआ ये सुनकर, तो मैं समझता हूँ कि इस प्रकार से जो भी लोगों को मौका मिले, जो भी लोग इसमें चिन्ता करे, देखिए राजनीति को आप अपने तरीके, अपनी चिढ़न से, अलग नहीं कर पायेंगे। राजनीति माध्यम बनेगा जीवन को सुधारने का। राजनीति माध्यम बनेगा सरकारी व्यवस्थाओं को सुधारने का। राजनीति ही माध्यम बनेगा अगर हमें भ्रष्टाचार मिटाना है। आखिर मोदी जी ने जिस प्रकार से दो–सवा दो वर्ष में एक मिसाल कायम की कि हर एक काम को पारदर्शी तरीके से किया जाये, हर एक काम की जानकारी जनता के साथ शेयर करी जाये, विकास पर्व पर मुझे भी मौका मिला बताने का कि दो वर्ष में क्या–क्या काम किये हमारी केन्द्र सरकार ने, राज्य सरकार की मदद से और मैं समझता हूँ कि अगर हमारे समाज के लोग इसमें और अधिक भागीदारी दें, उसका एक और पहलू उनको काम करने में बहुत मदद करेगा। मुझे अभी रिसेंटली कोई एक व्यक्ति आया था मुझसे बोला सर मुझे राजनीति में काम करना है, मैंने कहा तेरे परिवार की क्या परिस्थिति है, कौन है, क्या है, पता चला बहुत साधारण परिवार का था, और शायद राजनीति में आज लग जाता तो घर चलाने में दिक्कत होती और गलत कामों में पड़ सकता था, मैंने उसको कहा कि ऐसा करो पढ़ाई–लिखाई खत्म होने के बाद कुछ वर्ष अपना काम करो, नौकरी करो, व्यापार करो, स्टार्ट अप करो, आजकल तो बहुत एन्करेजमेंट मिलती है, थोड़ा पैसा कमा लो, थोड़ा बैंक बैलेंस हो जाये, फिर राजनीति में आना, जिससे तुम्हें कभी पैसे की कमी के कारण कोई गलत काम न करना पड़े। मैंने स्वयं पहले तीस वर्ष व्यावहारिक जीवन जीया, फैक्ट्री चलाई उसके बाद इन्वेस्टमेंट बैंकिंग की और एक भारी मात्रा में मेरे पास बैंक–बैलेंस था। इससे आज जब मैं काम करता हूं तो मेरे परिवार की स्थिति में भी कोई बदलाव नहीं आये, मेरे बच्चों को उच्च स्तर की शिक्षा मिल सके, मेरी पत्नी को कोई लालच नहीं आये पैसे का, कोई मोह नहीं आये किसी विषय का, और मैं आपसे मिलके कन्धे से कन्धा लगा के काम कर सकूँ और ये समाज के पास एक

ताकत है, हमारे परिवार में कोई न कोई व्यापार संभालता है, मेरा बड़ा भाई व्यापार संभालता है, और फारचुनेटली उसका बिजली या विद्युत क्षेत्र से कोई दूर–दूर तक नाता नहीं है, वैसे हम अलग–अलग हैं ।

अग्रवाल समाज के लोगों के पास वो क्षमता है कि वो समय दे सकते हैं और ईमानदारी से राजनीति में भाग ले सकते हैं और मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार से आज का ये कार्यक्रम आपने आयोजित किया है ऐसे ही और ज्यादा कार्यक्रम और बड़े कार्यक्रम आप सब मिल जुलकर कर पायें, आप सब इन कार्यक्रमों को अच्छी तरीके से, सुचारु रूप से सफल बना पायें तो इससे जो समाज में मैसेज जायेगा इससे जो पूरे देश में मैसेज जायेगा कि हमारा समाज सिर्फ अपने जीवन की चिन्ता नहीं करता, दूसरे की अधिक चिन्ता करता है, आज रविवार का दिन है, सुबह–सुबह 10 बजे हमने कठिनाई दी आपको यहां आने की, लेकिन आप सब आये, भारी संख्या में आये, शायद आप में से थोड़े परिवार ऐसे होंगे जिनके लड़के–लड़कियों को आज परिचय देने का मौका मिलेगा, मिलने–जुलने का मौका मिलेगा, पर मैं समझता हूँ कि अधिकांश लोग जो उद्घाटन सत्र में, ये तो एक समाज से जुड़ाव एक अच्छे काम से जुड़ने के नाते आप सब यहाँ आये हैं और मैं आप सबको बधाई दूंगा कि ये जो हमारी सोच है यही इस समाज की ताकत है और इस ताकत को मनोबल मिले उसके लिए अरुण जी जैसे अच्छे विधायक, कालीचरण जी हमारे समाज के नेता, इन सबके सान्निध्य में जब हम ऐसे कार्यक्रम और अधिक करेंगे और वे अलग–अलग प्रकार के कार्यक्रम हो सकते हैं, अलग–अलग दिन कार्यक्रम हो सकते हैं, अलग–अलग मौके पर, मैं जैसे उदाहरण के लिए हम महात्मा गांधी जी का जन्मदिन मनाने वाले हैं 2 अक्टूबर को, उस दिन कोई कार्यक्रम जिसपे एक हमसे एक आर्थिक क्षमता रखने वाले व्यक्ति अगर कुछ काम कर सकें तो ये अस्पताल, सरकारी अस्पताल में जाकर कुछ काम करें, मैं अभी–अभी कल रात को हम चर्चा कर रहे थे तो मैंने एक छोटी सी बात रखी, कई लोगों को मीटिंग में जंची, मुझे बड़ा दुख होता है जब मैं मुम्बई जैसी जगह में देखता हूँ, और मुम्बई तो देश की आर्थिक राजधानी है, मुम्बई, जयपुर, दिल्ली इन जगहों पर भी आपको देखने में मिलेगा गरीब बच्चे, गरीब लड़के–लड़कियाँ, जिनके पाँव में चप्पल नहीं होते, आज भी इस देश में करोड़ों की संख्या में ऐसे लोग हैं जिनके पांव में चप्पल नहीं है, और मैं आज सुबह अरुण जी को बता रहा था, मैं तो राज्य सभा से निर्वाचित होकर आया हूँ, मेर पास कोई ग्रामीण क्षेत्र का कोई लोकल कांस्टीटुएन्सी न होने के कारण मैंने पर्सनली इतनी गरीबी अनुभव नहीं की थी जितना मन्त्री बनने के बाद जब झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल इन जगहों में जाके, गाँव–गाँव में जहाँ खदानें हैं, वहॉ जाता हूँ, गाँव के जीवन से अपने आपको अवगत कराता हूँ, मैं एकदम आश्चर्यचकित रह जाता हूँ कि क्या स्थिति है इस देश की और जब वहाँ पे देखता हूँ कि एक तरफ कोयला निकल रहा है, उधर ही कोई बड़ा बिजलीघर बिजली बना रहा है, और उसी के नजदीक गाँव में व्यक्ति के पास पहनने की चप्पल भी नहीं है तपती हुई धूप में वो नंगे पैर घूम रहा है, मुझे बड़ी पीड़ा होती है, एक हमारे मित्र स्टेट बैंक से रिटायर हुए हैं, कुछ समय पहले उज्जैन में कुम्भ हुआ था, कुम्भ के दिनों में मैंने उनसे बाईचांस फोन पे बात की, मैंने कहा कि आप भी जुड़ेंगे होंगे कुम्भ से आप तो उज्जैन में रहते हैं, उन्होंने कहा हां मैं एकदम जुड़ा हुआ हूँ, और मैंने कुम्भ के रास्ते में स्टाल लगाया है और उस स्टाल के आगे से जो भी व्यक्ति कुम्भ की तरफ जा रहा हो और उसके पांव में कोई चप्पल नहीं हो, बूट नहीं हो, उनको मैं सिर्फ चप्पल पहनाने का काम कर रहा हूँ। मैंने उनको कहा ये तो बहुत बढ़िया काम है, इसमें मैं कुछ भी मदद कर सकूँ तो आप बिना संकोच के मुझे बोलिये, उनका कोई फोन नहीं आया, मैं कुछ दिनों पहले उनसे मिला तो मैंने उनसे पूछा कि आपने मुझे कोई फोन नहीं किया मैंने कहा था कि कुछ चाहिये हो, वो बोले नहीं कोई जरूरत ही नहीं पड़ी, जितने लोग चप्पल लेके जाते थे उससे ज्यादा लोग पैसे देके जाते थे। अच्छे काम के लिये कभी पैसे की कमी नहीं पड़ती है खासतौर पर भारत देश में, बहुत दानवीर हैं इस देश में, डोनर्स हैं, जो चिन्ता करते हैं समाज की, जो जुड़ना चाहते हैं अच्छे काम से।

मेरे पिताजी लगभग दशकों तक फण्ड राजिंग का काम करते रहे, कभी सामाजिक कामों के लिए, कभी अपने अग्रवाल समाज के कामों के लिए, राजनीतिक कामों के लिए, पार्टी के कोषाध्यक्ष के नाते, और मुझे याद है जब मैं छोटा था मैंने उनसे पूछा था एक बार कि पापा आपको शर्म नहीं आती है, आप जिधर भी जाते हो, जिसके पास भी जाते हो, कुछ न कुछ तरीके से पैसे माँगते हो। कभी पार्टी के लिए माँग रेह हो, कभी अग्रवाल विकास मंच के लिए मांग रेह हो, कभी वनवासी कल्याण आश्रम के लिए मांग रहे हो, कभी विद्या भारती के लिए, और

हमारे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तो लगभग हर क्षेत्र में सामाजिक काम में जुड़े हुए हैं। उन्होंने जो बात उस दिन मुझे कही वो मेरे जीवन भर का एक तरीके से मूल मन्त्र बना, उसके बाद उनसे भी लगभग वर्षों से पैसे इकट्ठे करने का काम किसी न किसी रूप में करना पड़ा है, उन्होंने कहा कि देखो अगर आप अच्छे काम के लिए पैसा मांगते हो तो आपको उसमें कोई सर झुकाने की या संकोच करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि जिस कार्य के लिए आप पैसा मांग रहे हो अगर उसपे विश्वास है, यदि वो अच्छा काम है और तुम्हारी विश्वसनीयता है कि तुम जिस काम के लिए मांग रहे हो, वो पैसा गलत इस्तेमाल नहीं होगा तो आप कुछ संकोच के बदले आप दूसरे को मौका दे रहे हो अच्छा काम करने का तो आप पुण्य का काम कर रहे हो पैसा मांगकर। और उन्होंने कहा कि कई लोग तो उल्टे प्रेम करते हैं कि कोई अच्छे काम के लिए आये, हमें सामाजिक काम के लिए कुछ देता है, लेकिन अच्छे काम को पहचानने की हमारे पास क्षमता नहीं है या समय नहीं है या मौका नहीं मिलता है। पापा के साथ तो ये था कि कई लोग कम्पलेंट करते थे, दुख प्रकट करते थे कि आपने तो ये फलाना–फलाना इलेक्शन में तो हमारे पास आये नहीं। नाराज होते थे कि उनसे पैसा नहीं मांगा। या उस कार्य में आप उस स्टेज पर दिखे थे पर आपने तो मुझे कांटैक्ट किया नहीं इस काम के लिए। ये विश्वसनीयता इस अग्रवाल समाज की देन है और समाज की सीख है। इसलिए अच्छे काम हम और अधिक करें, आप समझिए इस अच्छे काम से हम अपनी अगली पीढ़ी को एक प्रकार से हम तैयार कर रहे हैं एक अच्छा नागरिक बनने के लिए। ये छोटी लड़की यहाँ खड़ी है, ये लड़के–लड़कियाँ जिनका परिचय होने वाला है, इन सबको भी हमारे बुजुर्गों के किये हुए काम, हम सबके किए हुए काम एक प्रकार से एक मिसाल एक उदाहरण बनेंगे उनके जीवन में आगे चलकर अच्छे काम करने के लिए। और एक और उदाहरण, मैं बड़ा लम्बा बोल रहा हूँ (घड़ी देखते हुए) लेकिन एक और उदाहरण आपके सामने रखूंगा कैसे हम सबकी डेवलपमेंट हुई है। आखिर मेरी भी कुछ ऐसे ही कुछ ऐसे कार्यक्रमों में, मैं अभी अरुण जी को बता रहा था, थोड़ा संकोच कर रहे थे अरुण जी और कालीचरण जी, कि सुबह–सुबह जरा जल्दी मत करो, अभी संख्या आई नहीं है, तो मैंने हँस के बोला चिन्ता मत करो मैंने जीवन भर उधर बैठ के ऐसे ही काम किया है और मैं भी ऐसे ही जैकेट पहन के बहुत सारे सैकड़ों कार्यक्रम जिन्दगी भर किये हैं, संख्या कम हो ज्यादा हो उससे फर्क नहीं पड़ता है अब तो चलो बढ़ गया है, पर क्वालिटी ऑफ आडिएन्स, जिस प्रकार के लोग काम में जुड़े हैं, किस श्रद्धा से लोग जुड़े हैं और वो ज्यादा वैलुएबल है, और मुझे वो श्रद्धा इन सबमें दिख रही है, और हमने कैसे सीखा, इन्होंने कैसे सीखा, एक डॉक्टर अजीत फड़के मुम्बई के सबसे प्रमुख जियोलॉजिस्ट, इन फैक्ट आदित्य बिड़ला समूह के मालिक थे उनके कम आयु में देहान्त हो गया, किडनी की प्रॉब्लम के कारण, उनके वो डॉक्टर थे डॉक्टर अजीत फड़के, समाजसेवा करते थे, आज भी उनके किये हुए कामों का जितना जिक्र करें कम है। बॉम्बे हॉस्पिटल के जियोलॉजिस्ट थे। मुझे कुछ समस्या हुई थी जब मैं छोटा था, और मेरे पिताजी को भी समस्या थी और शायद मेरे लड़के को भी बाद में कुछ समस्या हुई। तो पहले पिताजी उनके पेशेन्ट थे, फिर मैं बना और फिर मेरा लड़का उनका पेशेन्ट बना। पिताजी के समय से उन्होंने कभी भी एक रुपया हमसे फीस नहीं ली, पापा कम्पनी में नौकरी करते थे, पूरा मेडिकल उनका कम्पनी पे करती थी, मैं अपने व्यापार में था, भगवान की दया से, भगवान में बहुत विश्वास रखता था, मेरी क्षमता थी कोई भी फीस पे करने की, और मेरी पत्नी झगड़ती थी उनके साथ, घर पर मेरी पत्नी उनकी सबसे बड़ी फैन बन गयी और अब उनके कामों को आगे बढ़ा रही है। देखिए झगड़ती थी कि अंकल आप हमसे तो ले लो, हम तो दे सकते हैं, कोई और गरीब का फ्री इलाज कर देना, उन्होंने कभी भी, अच्छा जब वो बहुत झगड़ा करते थे तो मैं तीन दिन उनके नर्सिंग होम में रहा तो उन्होंने कोई 340 रुपये का बिल दिया, झगड़ा करने के बाद, और क्या सीख दी, पापा का ट्रीटमेंट हो रहा था, बॉम्बे हॉस्पिटल में एडमिट थे, और जब बहुत इस विषय पर गर्मागर्मी हो गयी डॉक्टर फड़के ने मुझे और मेरी पत्नी को बुलाकर बोला सीमा! मैं इसलिए तुमसे पैसे नहीं ले रहा हूँ तुम्होर पिताजी के इलाज के लिए क्योंकि जिस प्रकार से वेदप्रकाश जी ने जीवन भर समाज की सेवा की, मैं जब उनसे निःशुल्क उनकी सेवा कर रहा हूँ तो मैं उम्मीद करूँगा कि तुम भी बड़े होके इसी प्रकार से लोगों की सेवा करोगे, और जब तुम ये सेवा करोगे तो घर जाके तुम्हारा बच्चा भी ये सीख तुमसे लेगा। और मैं समझता हूँ जो सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं जब इस श्रद्धा भाव से समाज के प्रति काम करते हैं तो वो श्रद्धा भाव सिर्फ हममें सम्मिलित नहीं रहती है, हमारे से ही सिर्फ उसका नाता नहीं रहता है, वो नाता समाज में हर वर्ग में जाता है। वह सिर्फ एक समाज तक ही सीमित नहीं रहता है, वो पूरे देश में फैलता है। हमारे ऊपर के लोगों में

हमारे परिवारों में सीमित नहीं रहेगा, हमारे पड़ोसियों में, हमारे कारखानों में, हमारे संस्थान में, काम करने वाले हमारे से सम्पर्क करने वाले सभी लोगों में आयेगा। आज के इस परिचय कार्यक्रम में जितने 1300 बायोडेटा आये हैं आखिर उनमें भी एक समाज के प्रति समर्पित रहने की भावना जाग्रत होती है। शायद गणेश चतुर्थी से ये त्यौहार का सिलसिला शुरू होता है, ऐसे पावन अवसर पर आप सबने ये कार्यक्रम का आयोजन करके एक बहुत ही पाजिटिव मैसेज, बहुत ही बढ़िया मैसेज पूरे जयपुर को, पूरे राजस्थान को और पूरे देश को दिया है, मैं इसके लिए आप सभी को बहुत–बहुत बधाई देता हूँ, तहेदिल से शुभकामनाएं देता हूँ कि आज का कार्यक्रम और आज का द्वितीय युवक–युवती परिचय सम्मेलन अग्रवाल सेवा समिति जयपुर द्वारा आयोजित किया गया है और अशोक गुप्ता जी और सभी आये अतिथिगण खासतौर पर डॉक्टर अरूप चतुर्वेदी जी जिन्होंने जीवन भर समाज से अपना जुड़ाव रखा, जीवन भर अपने जीवन को समाज सेवा में समर्पित किया और जिन्होंने विशुद्ध राजनीति का, इनके पिताजी ने इनको वही सीख दी जो मेरे पिताजी ने मुझे दी, तो एक प्रकार से हम दोनों बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि हमारे को सान्निध्य मिला ललित जी का या प्रेम प्रकाश जी का और मैं समझता हूँ डॉक्टर अरुप चतुर्वेदी जी इसी प्रकार से समाज सेवा करते रहें, अपने राजनीतिक जीवन में भी, अपने सामाजिक जीवन में भी, इसके लिए भगवान इनको बहुत–बहुत आशीर्वाद दे, स्वामी जी इनको आशीर्वाद दें, और मैं समझता हूँ आगे चलके हम सब यहाँ पर उपस्थित एक–एक परिवार का व्यक्ति इसी प्रकार से देशसेवा में अपना एक पाँव देश सेवा के लिए पूर्ण समय रखे, इस उम्मीद के साथ इस विश्वास के साथ मैं आपसे इजाजत लेता हूँ, बहुत–बहुत धन्यवाद, महाराजा अग्रसेन जी को मैं समझता हूँ जितनी हम श्रद्धांजलि दें, जितना हम उनका नमन करें वो कम है। क्योंकि उन्होंने एक ऐसा समाज तैयार किया है जो कभी भी इस देश में किसी भी प्रकार का संकट आये ये समाज सबसे आगे–आगे रहेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

बहुत–बहुत धन्यवाद।